सामाजिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं

(Historical background and development
Social Psychology

सामाजिक मनोविज्ञान के इतिहास के बारे में आदि
उपलब्ध नहीं है। वास्तविकता यह है कि मानव
सामाजिक स्वभाव सदैव से ही विद्वानों के लिए जि
विषय रहा है। यह कहना बहुत कठिन है कि म
सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन सबसे पहले कि
किया और किस समय आरम्भ हुआ। इतना अ
कि सामाजिक मनोविज्ञान का वर्तमान रूप पाश्
से विकसित हुआ है। इसलिए इसकी उत्पत्ति
को पाश्चात्य विद्वानों की रचनाओं और लेखों
खोजा जा सकता है। सत्य तो यह है कि प्लेटो
से लेकर कोम्टे के समय तक सभी दार्शनि
के सामाजिक स्वभाव से सम्बन्धित विभिन्न
प्रकाश डालते रहे हैं। जैसे प्लेटो (Plato) के
उनके अमर कृति Republic में देखने को मिलते हैं। उन्होंने
किया कि कोई भी व्यक्ति स्वयं में आत्मनि
सम्पूर्ण नहीं होता इसलिए उसे जीवन के प्रत्येक
के सहयोग की आवश्यकता होती है। व्यक्ति का
व्यवहार समाज के अन्य व्यक्तियों से प्रभावित
यही कारण है कि व्यक्ति उसी प्रकार व्यवहार
जिसप्रकार समाज द्वारा उसे व्यवहार करना।
है। इसप्रकार व्यक्ति के व्यवहारों की प्रकृति उ
पर निर्भर होती है जिसमें व रहता है। अ
कि मानव व्यवहार समाज की उपज न होकर व्यक्ति
प्रवृत्तियों का परिणाम होते हैं।

— X —

Definition of Social Psychology

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को विद्वानों ने अ
परिभाषाओं के द्वारा स्पष्ट किया है, परन्तु अधिकां
विद्वान Allport के इस विचार से सहमत है कि सा
मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र व्यक्ति की स्वा
प्रकृति है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए आलपो
लिखा है, " कुछ एक विद्वानों को छोड़कर प्राय
विद्वान सामाजिक मनोविज्ञान को एक ऐसा अध्य
मानते हैं जो यह समझने और समझाने का
करता है कि व्यक्ति का चिन्तन, भावनाएं और
किस प्रकार दूसरे लोगों की वास्तविक, काल्प
या अन्य अन्तर्निहित उपस्थिति से प्रभावित होते
इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक मनोविज्ञान
के उस व्यवहार का अध्ययन है जो अन्य
को प्रभावित करता है तथा स्वयं भी अन्य
के व्यवहारों से प्रभावित होता है।

Sherif and Sherif ने संक्षिप्त परि
देते हुए कहा है, " सामाजिक मनोविज्ञान प्रेरक
परिस्थितियों के सन्दर्भ में व्यक्ति के अनुभव त
का वैज्ञानिक अध्ययन है।" इस परिभाषा में
रूप से प्रेरित करनेवाली परिस्थितियों " से
तात्पर्य उन व्यक्तियों और समूहों से है जो
सामाजिक - सांस्कृतिक पर्यावरण का अंग
इसप्रकार व्यक्ति का प्रत्येक व्यवहार कि
किसी प्रेरक सामाजिक परिस्थिति का ही
होता है। तथा सामाजिक मनोविज्ञान इन्हीं
का अध्ययन करता है।

Krech and Crutchfield ने सामाजिक

Notes

को सरल शब्दों में परिभाषित करते
है कि " सामाजिक मनोविज्ञान समाज
के व्यवहार के प्रत्येक पहलू से सम्ब
सामाजिक मनोविज्ञान को व्यक्ति के व्यव
वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित
सकता है।" इस कथन से स्पष्ट
कि सामाजिक मनोविज्ञान समाज में
व्यवहारों का अध्ययन है। यह ध्या
आवश्यक है कि समाज में व्यक्ति
व्यवहार बहुत प्रधान होते हैं। इन
स्रोत समाज के अनेक दूसरे व्य
तथा कुछ अप्रत्यक्ष दशाओं, प्रेरणाओं,
मान्यताएं आदि होते हैं। साथ ही दू
विज्ञान व्यक्ति के व्यवहार के केवल
पक्ष (आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक
ही अध्ययन करते हैं, जबकि सामा
ज्ञान की वह शाखा है जो समाज
व्यवहार के सभी पहलुओं का अध्य
सामाजिक मनोविज्ञान की
परिभाषा से यह समझना है कि
प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में
अन्तःक्रियाएं करता है, उनसे स्वयं
है और दूसरे को भी प्रभावित करता है।
सामाजिक मनोविज्ञान को ज्ञान की एक
के रूप में परिभाषित किया जा सकता
समाज के सन्दर्भ में व्यक्ति के व्यवहा
अध्ययन किया जाता है।

Mob - 9294039693 Dr Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College DBG

DI (H

Date 28/0

Social Psychology : An Introduc

सामाजिक मनोविज्ञान : एक परिचय

मानव एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य इस
सामाजिक है कि उसे अपनी क्षमताओं को विक
के लिए समाज पर निर्भर रहना पड़ता है। य
है कि व्यक्ति के जीवन का कोई भी पक्ष ऐ
जो समाज के द्वारा प्रभावित न होता हो। य
से देखा जाय तो स्पष्ट होता है कि व्यक्ति
अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं की
दूसरे व्यक्तियों तथा समूहों से अन्तःक्रि
सम्बन्ध स्थापित करना ही पड़ता है। अन्त
पर आधारित यह सम्बन्ध न केवल व्य
विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं
इसके विचारों, भावनाओं और दृष्टिको
प्रभावित करते हैं। इन्हीं की संयुक्तता
के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। स्प
अन्तःक्रियात्मक सम्बन्धों और पारस्परिक प्र
दृष्टिकोण से व्यक्ति और समाज को एक
पृथक नहीं किया जा सकता। सच तो
व्यक्ति कभी भी एकाकी नहीं होता।
सामान्य शब्दों में यह कहा जा सक
बचपन से वृद्धावस्था तक सामाजिक परि
प्रभावित होकर व्यक्ति द्वारा की जाने वाल
प्रतिक्रियाओं, मानसिक प्रक्रियाओं तथा
वैज्ञानिक अध्ययन ज्ञान की जिस शाखा
किया जाता है, उसी को हम 'सामाजिक
कहते हैं। दूसरे शब्दों में सामाजिक

(2)

एवं व्यक्ति तथा व्यक्ति एवं समूह की पारस्परिक अन्तःक्रियाओं और इनके परिणा[illegible] अध्ययन है।

यह सच है कि अन्य सामाजिक [illegible] की तुलना में समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है [illegible] लेकिन बहुत कम समय में ही इसके अन्तर्ग[illegible] अनेक विशिष्ट शाखाओं का प्रादुर्भाव होने [illegible] सामाजिक मनोविज्ञान आज के इन्हीं विशिष्[illegible] क्षेत्रों में से एक है। यह व्यक्ति के वि[illegible] को सामाजिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट करने [illegible] प्रयास करता है। कुछ समय पहले तक [illegible] जाता था कि व्यक्ति एक instinctive bei[illegible] तथा जन्म से ही उसमें कुछ ऐसी मान[illegible] विशेषताएं होती हैं जो उसके समस्त व्यव[illegible] प्रभावित करती हैं। वास्तविकता यह है कि [illegible] का विकास स्वयं एक सामाजिक प्रक्रिया [illegible] हमारा मस्तिष्क उसी तरह विकसित होता औ[illegible] करता है जैसी घटनाएं उसके चारों ओर [illegible] हो रही होती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि [illegible] व्यवहार मानसिक प्रक्रियाओं और सामाजि[illegible] परिस्थितियों का संयुक्त परिणाम होता है [illegible] मानव व्यवहारों का अध्ययन करने वाले [illegible] को हम सामाजिक मनोविज्ञान कहते हैं। [illegible] यह शाखा व्यक्ति के व्यवहारों को अपने अ[illegible] का केन्द्र मानते हुए भी समाज और समूह [illegible] प्रभावित मनोवृत्तियों, प्रेरणाओं, सीख और [illegible] प्रत्यक्षीकरण के अध्ययन को महत्व देती [illegible]